Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

अनुसूचित जातियों के कल्याणकारी कार्यकर्मों का विश्लेषण

Varsha[1]* Dr. Rajbir Singh[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

[2] HOD Department of Political Science G.G.D.S.D. College, Palwal Haryana

सार – ***शिक्षा की जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया परिवार से प्रारम्भ होती है जहाँ एक बालक अपने जीवन का मुख्य भार्गव्यतीत करता है। माता बालक की सर्वोपरि शिक्षिका होती है वह बालक को अनौपचारिक शिक्षा अपने निर्देशनों आार परामर्श के द्वारा देती हैं बालक औपचारिक चीजों को अपने से बड़ों व सहपाठियों से सीखता है। इन अनौपचारिक शिक्षणों से बालक धीरे-धीरे औपचारिक शिक्षणों के लिये तायार होता है गाँधीजी के अनुसार "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है।"***

पेस्टालॉजी के अनुसार "शिक्षा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण (समरस) और प्रगतिशील विकास है। दुर्खीम (1956) के अनुसार "शिक्षा का अर्थ बालक के भौतिक, मानसिक और नैतिक पक्षों का आव्हन एवं विकास करना है" लुइस (1979) शिक्षा को समाज का अभिन्न अंर्गमानते है और वे यह भी मानते है कि शिक्षा के बिना सभी ज्ञान के भण्डार तथा चारित्रिक मापदण्ड नष्ट हो जायेंगे।

----------X----------

प्रस्तावना:

समाज का प्रमुख आधार मनुष्य होता हैं जब मनुष्य को शिक्षा के माध्यम से उसकी अन्तर्निहित शक्तियों से अवगत न कराया जाये तब तक उसका शारीरिक, मानसिक, नातिक आध्यात्मिक विकास सम्भव नही है। बालक के सर्वांगीण विकास के अभाव में समाज की नींव एवं व्यवस्था नही हो सकती क्योंकि शिक्षा जीवन को व्यवहारिक धरातल प्रदान करती है आार प्रत्येक मनुष्य के जीवन की सच्चाइयों की उजागर करती है। प्रत्येक व्यक्ति का प्रसंर्गआते ही सदियों से उपेक्षित, शोषित जातियों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है जिसने जाति भेद की समस्या को जन्म दिया। जाति भेद की समस्या का सूत्रपात वैदिक कालीन समाज व्यवस्था से प्रारम्भ होता हैं वर्ण व्यवस्था का जब कोई नाम लेता है तो वेदों, पुराणों, स्मृतियों में अंकित सीमित अधिकारों की ओर ध्यान अनायास ही आकर्षित हो जाता है क्योंकि मानव की समस्त स्वाभाविक शक्तियों का पूर्ण, प्रगतिशील विकास ही शिक्षा हैं यदि शक्षा के गौरवपूर्ण इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि भारतीय शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है इसकी प्राचीनता एवं विद्वता का प्रमाण मनुस्मृति से ज्ञात है।

परम्परागत जाति पर आधारित भारतीय समाज की संरचना चार वर्गों में विभाजित है जिसमें सबसे ऊपर ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबसे नीचे है। इसमें शूद्र वर्ग में स्थित लोगों को निम्न वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के नाम से जाना जाता है। घुरे (1969) इनका विवरण देते हुए इन्हें "निराशावादी वर्ग" और इन्हें हिन्दू जाति व्यवस्था में "पाँचवाँ दर्जे" का समझा जाता हैं अनेकों प्रयासों के बावजूद अभी भी काफी संख्या में 6-14 वर्ष के बच्चे विद्यालय नही जा पाते हैं ऐसे वर्गों के छात्रों की स्थिति को बेहतर करने के लिये भारत सरकार इनके लिये कई योजनाएँ, सर्वशिक्षा अभियान, निःशुल्क सुविधाएँ, छात्रवृत्तियाँ आदि कार्यक्रम चला रही है फिर भी इन वर्गों के छात्र अभी भी शिक्षा के प्रति अधिक जागरुक दिखाई नही देते हैं।

शहर में रहने वाले अनु0जाति व अनु0 जनजाति का वर्ग महसूस करता है कि शिक्षारूपी आाजार के द्वारा वह जाति व्यवस्था से मुक्ति प्राप्त कर सकता है लेकिन शिक्षा का लाभ ग्रामीण क्षेत्रों के इन वर्गों को आसानी से नही पहुँच पाता क्योंकि इनकी अनेकों समस्याएँ होती है यथा शिक्षा की कमी, गरीबी, अशिक्षा, शिक्षा के प्रति अभिभावकों का नकारात्मक

www.ignited.in

दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, परिवार की पृष्ठभूमि, परिवार की शिक्षा के प्रति जागरूकता, यातायात के साधनों का उपलब्ध न होना कई सारे शिक्षा से सम्बन्धित अवसरों का भी परीक्षण अनु0जाति एवं जनजाति के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कमी का कारण जानने के लिये आवश्यक है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है जहाँ उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। सभी रूचियों, आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पारिवारिक सदस्यों द्वारा प्रदत्त निर्देशन, प्रेरणा, सहयोग, प्रोत्साहन, व्यवहार में लायी जाने वाली शिक्षा आदि मिलकर पारिवारिक वातावरण बनाते है। जिसका प्रभाव विद्यार्थि यों की आदतों एवं रूचियों पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है।

अनुसूचित जातियों के कल्याणकारी कार्यकर्मों का विश्लेषण

परिवार का वातावरण ही अपने परिवार के सदस्यों और छात्रों में उच्च सद्भावना, उचित मनोबल, अनिष्ठता को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है साथ ही एकाकीपन, बाधाओं को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य भी करता है जिससे परिवार के सदस्यों के बीच उचित सामंजस्य बना रहता हैं।

बालक समाज में रहता है जिसके मानदण्ड, सम्बन्ध, परम्परायें, मान्यताऐं आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास को प्रभावित करते हैं बालक जिस प्रकार के समाज में रहता है उसका सामाजिक विकास वैसा ही होता हैं साधारणतः उच्चवर्गीय परिवार में बालकों की रूचियाँ विस्तृत होती है क्योंकि उनके पास संसाधन अधिक होने से विचारों एवं गतिविधियों को विस्तारित करने के अवसर अधिक उपलब्ध होते है जबकि एक गरीब परिवार जो कि शिक्षा के प्रति अति सम्मान रखता है अपने बच्चों को अधिगम के अवसर देने के लिये त्यार्गभी कर सकता है उनके बच्चों की रूचियाँ संकुचित होती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बाधक साबित होती हैं।

पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, अभिभावकों की जागरूकता ये सभी विद्यार्थी को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से उसके शिक्षण कार्य को प्रभावित करता है तथा शाक्षिक अभिप्रेरणा से विद्यार्थी और उनकी उपलब्धि प्रभावित होती हैं इन सभी के द्वारा उनके जीवन काल में अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं वह शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शाक्षिक उपलब्धि को मुख्य रूप से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों में आंका जा सकता हैं यह विद्यार्थियों की स्वयं की योग्यताओं पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा अभिभावकों की जागरूकता से प्रभावित होती हैं।

किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता एवं प्रगतिशीलता उसके विचारशील नागरिकों पर निर्भर करती है। विचारशील नागरिक प्रजातांत्रिक राष्ट्रों की अनिवार्यता है क्योंकि प्रजातंत्र की सफलता कभी भी अशिक्षा के साथ सम्भव नही हो सकती है। शिक्षा के अभाव में इन राष्ट्रों की सफलता किसी भी क्षेत्र में संदिग्ध रहती है। इसीलिये प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की जनसंख्या को शिक्षित करने की ओर निरन्तर प्रयासरत रहता है। विभिन्न आयोगों, रिपोर्टस एवं पत्र-पत्रिकाओं, योजनाओं में प्रकाशित आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि विकसित, अविकसित एवं विकासशील राष्ट्रों में विभेदता का एक मुख्य कारण शिक्षा के प्रतिशत में भिन्नता होना भी है क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही तर्कपूर्ण चिन्तन के आधार पर समस्याओं का उपयुक्त समाधान खोजने में सक्षम होते हैं पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्तर शैक्षिक अभिप्रेरणा का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर निःसन्देह सकारात्मक प्रभाव पड़ता है इस व्यवस्था की क्रियान्विति में अभिभावकों की जागरूकता का अत्यधिक प्रभाव होता है जो कि परिवार आार समाज एवं शाक्षिक अभिप्रेरणा के सुसमंजन से तायार होता हैं।

एस.के. यादव (1981) लन श्री (1988) ने अपने शोध अध्ययन में देखा कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के अभिभावकों का दृष्टिकोण भी उन्हें शिक्षा प्रदान किये जाने के सन्दर्भ में बहुत कुछ उपेक्षित रहा हैं इन्हीं के सन्दर्भ में अहलूवालिया (1985) ने शोध अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि विद्यार्थी की शाक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकों की शिक्षा, परिवार का आकार और आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा आयोर्ग (1964-66) के प्रतिवेदन में कहा गया है कि शिक्षा में निम्न शैक्षिक उपलब्धि की समस्या किसी भी विकासशील राष्ट्र के विकास के लिये महत्व का विषय है एवं कोई भी विकासशील राष्ट्र इस समस्या के प्रति उदासीन नहीं रह सकता है। डोमिनिक (1995) ने पारिवारिक वातावरण एवं छात्र उपलब्धि के अध्ययन में पाया कि विद्यालयी वातावरण और छात्र उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होता हैं पाल (2000) ने एक शोध माता-पिता के व्यवहार का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया आार निष्कर्ष पर पहुँचे कि जिन बच्चों के माता-पिता उनके साथ शाक्षिक गतिविधियों के सम्बन्ध में अधिक विचार- विमर्श करते थे उन बच्चों की शाक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

निष्कर्ष

साहित्य के गहन सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों की जागरूकता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन किये गये हैं।

इन शोध के पुनर्विश्लेषण करने पर कुछ शोध अध्ययनों जैसे मधु गुप्ता (1994), तनूजा अग्रवाल (1996), मुकेश गौतम (1999) में पाया गया कि अनु0 जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की रूचियों, अभिवृत्तियों, सृजनात्मकता, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि आदि के सन्दर्भ में अध्ययन सम्पादित किये गये जिसमें दोनों वर्गों के मध्य सार्थक अन्तर को देखा गया।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी, ए. एवं महश्वरी, एस.आर, लोकप्रशासन, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, 1992
2. बडयाल, जे.एस., राजनीति-शास्त्र के सिद्धांत और धारणाएं तथा लोकतन्त्र, हॉलिडे इन्टरनेशनल प्राईवेट लिमिटाड, जालन्धर, 2000
3. भारत का संविधान, विधि, न्याय और कम्पनी मंत्रालय, भारत सरकार, 2000
4. बर्थवाल, सी.पी., सम्पादित, सोशल जस्टिस इन इण्डिया, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 1998
5. चौधरी, धर्मपाल, सामाजिक कार्य का परिचय, आत्माराम एण्ड सन्स्, दिल्ली-लखनऊ, 1990
6. चौधरी, डी. पाल, समाज कल्याण प्रशासन, आत्माराम एण्ड सन्स्, नई दिल्ली।

Corresponding Author

Varsha*

Research Scholar, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

www.ignited.in